इन्द्रप्रस्थ विश्व संवाद केन्द्र

8बी /6428–29 प्रथम तल, आर्यसमाज रोड, देवनगर नई दिल्ली–110005,
दूरभाष : 011–25862042, फैक्स : 011–25822649, ईमेल– ivskdelhi@gmail.com

10–07–2013

''विवेकानन्द के सपनों का भारत'' का लोकापर्ण

प्रभात प्रकाशन के तत्वाधान में डॉ. बजरंगलाल गुप्ता व श्री लक्ष्मीनारायण भाला द्वारा लिखी पुस्तक ''विवेकानन्द के सपनों का भारत'' का लोकापर्ण किया गया। स्वामी विवेकानन्द की 150वीं जयंती वर्ष के उपलक्ष्य पर नई दिल्ली स्थित कान्स्टीट्यूशन क्लब में पुस्तक का विमोचन श्रीमती सुषमा स्वराज ने किया। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि भारत स्वाभिमानी, शक्तिशाली, स्वावलम्बी, संस्कारित और संगठित बने ऐसा स्वामी विवेकानन्द चाहते थे। इस हेतु देश को निकट से जानने के लिए उन्होंने सारे भारत का भ्रमण किया। इस दौरान भारत में घोर गरीबी, भुखमरी, कुपोषण से ग्रसित लोग, दर्द-बीमारी से छटपटाते लोग, झुग्गी-झोपड़ियों का नारकीय जीवन, तथा बेरोजगारी को स्वामी जी ने देखा। स्वामी जी का हृदय इससे बहुत विचलित हो उठा और उन्होंने इसे दूर करने का निश्चय किया। उन्होंने अपने सहपाठियों एवं युवाओं का आह्वान किया कि योगी बनने से पहले उपयोगी बनो, अपने गुरु भाइयों से उन्होंने कहा कि देश को दुःख मुक्त करने के लिए देश को पहले निकट से जानो, इसके लिए भ्रमण करो। दिवा स्वप्न मत देखो अपितु दिव्य स्वप्न देखो। उन्होंने बताया जिससे मन में संकल्प जगे वह दिव्य स्वपन है, जिस स्वप्न में सत्य साकार बने वह दिव्य स्वप्न है। भारत भ्रमण के दौरान स्वामी जी ने अनुभव किया कि इतने कष्टों में भी यहां लोगों में ईश्वर के प्रति विश्वास है और वे धर्म के मार्ग पर चल रहे हैं। उन्होंने देशभक्ति के लिए तीन बातें युवाओं को बताईं, पहले दूसरों के कष्टों को हृदय से अनुभव करो, दूसरे स्वयं यथार्थ रूप से कर्तव्य पथ पर अग्रसर हो जाओ, तीसरे दृड़ता से उस मार्ग पर चलते रहो। पुस्तक के विषय पर बोलते हुए श्रीमती सुषमा स्वराज ने बताया कि हममें संगठन का बहुत अभाव है और कोई भी महान कार्य बिना संगठन की शक्ति के संभव नहीं। इसलिए अपने में संगठन करने के गुण पैदा करो, यह तभी संभव है जब हम स्वयं अहंकार-ईष्या का त्याग करें, दूसरों के विचारों को सुनें, उनके सुझावों पर चलें और इसकी शुरुआत पहले अपने घर से करें। पुस्तक के लेखक श्री लक्ष्मी नारायण भाला ने अपने उदबोधन में बताया कि भारत के पास वह चीज है जो दूसरों के पास नहीं हैं वह है वसुधैव कुटुम्बकम का विचार। भारत के पुनरुत्थान के लिए 'वेदान्ति बुद्धि और इस्लामी शरीर' की आवश्यकता है। वसुधैव कुटुम्बकम, सत्य एक है, पराई स्त्री को माता के समान मानो यह वेदान्ति बुद्धि है। जो अपने सिद्धान्तों पर, विचारों पर, जीवन शैली पर अडिग रहता है वह इस्लामी शरीर है। भारत के उत्थान के लिए इन दोनों को मिला देना चाहिए ऐसा स्वामी विवेकानन्द का विचार था। वीर सावरकर ने इसका अनुसरण किया, नेताजी सुभाष ने आजाद हिंद की स्थापना करके इसका अनुसरण किया, डॉ. हेडगेवार ने लोगों को संगठित करके इसको अपनाया। जयप्रकाश नारायण का प्रयास तथा राम जन्मभूमि आन्दोलन भी इसी प्रकार का प्रयास था। रामकृष्ण मिशन दिल्ली के सचिव स्वामी शांतात्मानन्द महाराज ने बताया कि स्वामी विवेकानन्द अपने समय से पांच सौ वर्ष आगे की सोच रखते थे। बेलूर मठ में महात्मा गांधी द्वारा स्वामी जी से मिलने पर गांधी जी ने भी कहा था कि उनसे मिलकर मेरी देश भक्ति हजार गुणा बढ़ गई है। ऐसी स्वामी जी की विचार अभिव्यक्ति थी, उनके विचार उनके शरीर के भावों से झलकते थे। उन्होंने बताया कि भारत के पुर्नगौरव की प्रतिष्ठा संभव है, भारत की विशेषता उसकी अध्यात्मिक्ता ही है, जिसके द्वारा भारत का पुर्नउत्थान होगा। उन्होंने बताया कि पिछले 5–10 वर्ष को देखें तो हम पाएंगे कि भारत ने बहुत प्रगति की है, जिसकी विश्व में प्रशंसा हो रही है। लेकिन साथ ही अमीरी-गरीबी का अन्तर भी बहुत बढ़ा है, गरीबों की संख्या बहुत बढ़ी है। इसको दूर करने के लिए उन्होंने स्वामी विवेकानन्द द्वारा बताए मार्ग पर चलने को कहा कि सभी को साथ लेकर चलें, समाज कल्याण में ही स्वयं का कल्याण है। उन्होंने देश के राजनीतिज्ञों का आह्वान करते हुए कहा कि वे त्याग और सेवा का भाव रखें। कार्यक्रम के समापन पर श्री प्रभात कुमार ने सभी उपस्थित विभूतियों के प्रति धन्यवाद एवं आभार प्रकट किया।